'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ९९ | वाराणसी, मंगलवार, १ सितम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

श्रीनगर (कश्मीर) ४-८-'५९

हमें एक स्वतन्त्र शान्ति की शक्ति का निर्माण करना है !

पहले दिन की तकरीर में मैंने लोकनीति का विचार समझाते हुए कहा था कि लोकनीति की बुनियाद रूहानियत ही होगी, सियासत नहीं और उसका कुल विचार सब मजहबों को, देशों को, जबानों को एक करने का रहेगा। फिर दूसरे दिन की तकरीर में जमीन की मालकियत मिटाने की बात कही। जैसे दुनिया के एक प्रमेय में से दूसरा निकलता है, वैसे ही दुनिया एक है, इस उसूल में से जमीन की मालकियत मिटाने की बात निकलती है। आज मैं तीसरी बात रखनेवाला हूँ।

दुनिया की परिस्थिति

आप जानते हैं कि आज दुनिया में जिधर देखो, उधर कशमकश चल रही है। दुनिया के किसी भी अखबार का पहला पन्ना देखिये तो उसमें कशमकश की ही खबरें दीखेंगी। एक-दूसरे की मुखालिफत करना और एक-दूसरे की तरफ शक, शुबह की निगाह से देखना, यही चल रहा है। जिसे बड़ी लड़ाई कह सकते हैं, ऐसी लड़ाई आज दुनिया में जारी नहीं है, लेकिन छिटपुट लड़ाइयाँ चल रही हैं। इधर-उधर थोड़ी आग लगाना चल रहा है। 'कोल्ड वार' (शीत-युद्ध) चल रहा है। सूबों में शांति के लिए टेबुल के इर्द-गिर्द बैठकर बहस, मुबाहिसा चलता है, वह 'कोल्ड वार' (शीत-युद्ध) नहीं, बल्कि 'हॉट पीस' (उष्ण शांति) है। इस तरह कुछ 'कोल्ड वार' और कुछ 'हॉट पीस' चलता रहता है।

आज हमने अखबार में पढ़ा कि बड़ी कृपा करके क्रुश्चेव महाराज और आईक महाराज एक-दूसरे से मिलनेवाले हैं और आपके और मेरे नसीब का फैसला करनेवाले हैं। इस वक्त कुल दुनिया २-४ लोगों के हाथ में है। अगर इनके दिमाग में कुछ फर्क आ गया तो कुल दुनिया तबाह हो जायगी। इसलिए आपको, मुझे अल्लामिया से दुआ माँगनी चाहिए कि वह हमें अक्ल न दे तो कोई परवाह नहीं, लेकिन आईक और क्रुश्चेव को अक्ल जरूर दे। क्योंकि उसने आपको और मुझे अक्ल नहीं दी तो मेरा और आपका ही बिगड़ेगा, दुनिया का क्या बिगडनेवाला है? लेकिन आईक या क्रुश्चेव की अक्ल में कहीं नुक्स रह गया तो आप और हम खत्म हो जायँगे। इस तरह चन्द लोगों के हाथ में दुनिया को बनाने या बिगाड़ने की ताकत रखना सबसे खतरनाक चीज है, यह हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

ब्राडकास्ट : डीपकास्ट

डेमोक्रेसी (लोकशाही) पर मेरा यही आक्षेप है कि आज की डेमोक्रेसी फार्मल (औपचारिक) बन गयी है। उसकी अन्दरूनी चीज, असलियत, इसका 'कन्टेन्ट' डेमोक्रेसी का नहीं है। जो ताकत पुराने किसी भी बादशाह के हाथ में नहीं थी, वह ताकत आज मामूली डी० सी० के हाथ में विज्ञान के कारण आयी है। और लोगों के हाथ में भी, पहले कभी नहीं थी, इतनी ताकत आज आयी है। लोगों के हाथ में ज्यादा से ज्यादा ताकत तो आयी है, लेकिन आज दुनिया में ज्यादा से ज्यादा डर भी छाया हुआ है। इतना डर पहले कभी नहीं था। हमारे पुरखाओं के पास वे चीजें नहीं थीं, जो आज हमारे पास हैं। इस समय 'लाउड-स्पीकर' की वजह से मैं हजारों लोगों के पास अपनी बात पहुँचा रहा हूँ। ईसा मसीह या बुद्ध भगवान के पास इस तरह 'लाउड-स्पीकर' नहीं था। ईसा के बारे में कहा है कि 'सीइंग दि मल्टिट्यूड ही ओपेन्ड हिज माउथ' (समुदाय को देखकर उन्होंने बोलना शुरू किया)। उसमें ज्यादा से ज्यादा पचास लोग होंगे। आज हजारों लोग एक साथ सुन सकते हैं। आज 'ब्राडकास्ट' तो होता है, लेकिन 'डीपकास्ट' नहीं होता। विचार इधर-उधर खूब फैलता है, लेकिन गहरा नहीं जाता। पुराने जमाने में विचार ज्यादा फैलता नहीं था, लेकिन गहरा जाता था। भगवान कृष्ण ने गीता एक ही शख्स को—अर्जुन को सुनायी थी, लेकिन आज वह चीज घर-घर पहुँच गयी है। इस तरह इफ्तेदाह (शुरुआत) में बिलकुल एक शख्स को सुनायी हुई बात बहुत गहरी जाती है। इन दिनों अक्सर बात गहरी नहीं जाती है। इधर-उधर फैलती है।

हथियारबन्द कायरता

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमारे पास जो भौतिक ताकत है, वह बहुत बड़ी है। पुराने लोग उसका अन्दाजा ही नहीं कर सकते थे। आज भय जितना बढ़ा है, उतना पहले कभी नहीं था। रूस को अमेरिका का डर मालूम होता है और अमेरिका को रूस का। पाकिस्तान को हिन्दुस्तान का डर मालूम होता है और हिन्दुस्तान को पाकिस्तान का। बड़े भी डर रहे हैं, छोटे भी और बीचवाले भी। डर आज हमारी जिन्दगी की एक मामूली चीज बन गयी है। क्या चिड़ियों की कभी समाधि

लगेगी ? वे एकाग्र नहीं हो सकती हैं। वे इधर-उधर देखती रहेंगी कि कहीं कोई परिन्दा आकर न झपटे ! उसी तरह आज इन्सान की जिन्दगी में डर छाया हुआ है। इसीलिए हथियार बढ़ रहे हैं। 'पीस टाइम' (शान्ति के समय) में भी लाखों की फौजें बन रही हैं, फिर 'वार टाइम' (लड़ाई के समय) में तो करोड़ों की फौजें बनती हैं, कुल राष्ट्र ही उठ खड़ा होता है। जर्मनी में एक करोड़ की फौज बनी और सारे राष्ट्र ने 'यूनाइटेड एफर्ट' (सामूहिक प्रयत्न) किया।

जब कि हिंसा की कुवतें बहुत बढ़ रही हैं, हमें अब कोई ऐसी ताकत ढूँढ़नी चाहिए, जिससे मसले हल हो सकें और जिसे दुश्मन कहते हैं, उसका हम सामना कर सकें। प्यार से, निडरता से दुश्मन को दोस्त बना सकें। पुराने ब्राह्मण 'ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः' कहते थे। कुरानशरीफ में जिक्र आया है कि बहिश्त (स्वर्ग) में सब लोग एक-दूसरे को सलाम (शान्ति) कहते हैं।

शान्तिप्रेमियों की दुविधा

इन दिनों शान्ति का जप सिर्फ मजहबवाले ही नहीं करते, बल्कि आईक, क्रुश्चेव, मैकमिलन वगैरह भी करते हैं। जप हो रहा है शान्ति का और काम हो रहा है हथियार बढ़ाने का। यह सब इसलिए हो रहा है कि फौजी ताकत बनानेवालों का फौजी ताकत पर विश्वास नहीं रहा है। फौजी ताकत से दुनिया का कोई मसला हल होगा, ऐसा भी विश्वास नहीं रहा है और अहिंसा, प्रेम से मसला हल होगा, ऐसा भी यकीन पैदा नहीं हुआ है। याने इधर से तो यकीन उड़ गया है, पर उधर बैठा नहीं है। ऐसी डाँवाडोल हालत है। जनरल मॅक आर्थर ने गान्धीजी की वफात (मृत्यु) के बाद कहा था : "गान्धीजी ने जो विचार रखा था, उसीसे दुनिया के मसले हल होनेवाले हैं, फौजी ताकत से नहीं।" अभी मैंने 'पीस न्यूज' में पढ़ा कि वह 'पैसिफिस्ट' (शान्तिवादी) बना है। यह कोई अचरज की बात नहीं है। आजकल आईक, माइक वगैरह सब के सब 'पैसिफिस्ट' बन जाते हैं। क्योंकि उनका दिमाग अभी डाँवाडोल है, उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा है। लेकिन दुनिया के किसी भी गोशे में कोई छोटा सा मसला भी प्यार से हल होगा तो कुल दुनिया का ध्यान उधर खिंच जायगा।

भिखारियों बनाम शांतिवादियों के सवाल

'भूदानयज्ञ' का काम देखने के लिए अब तक बीसों देशों के लोग मेरी यात्रा में आये हैं। इसकी और कोई वजह नहीं है, सिवाय इसके कि वे राह ढूँढ़ रहे हैं। वे हमसे यह नहीं पूछते कि आपको जमीन कितनी मिली और उसमें फसल कितनी पैदा हुई ? ऐसे सवाल तो हिंदुस्तान के भिखारी लोग ही पूछा करते हैं फसल तो अमेरिका बहुत बढ़ा चुका है। वह इतनी बढ़ी है कि वे फसल को खायें, इसके बजाय फसल ही उन्हें खा रही है। इसलिए भूदान से कितनी फसलें बढ़ीं, इसमें उन्हें दिलचस्पी नहीं है। वे हमसे पूछते हैं कि भूदान में जिन्होंने जमीन दी, उनके दिलों में कोई फर्क पड़ा है या यह काम देखादेखी हुआ है ? अगर उन्हें यह जवाब मिलता है कि लोगों के दिलों में वास्तव में फर्क आया है, अपने पड़ोसी को जमीन देनी चाहिए, यों सोचकर लोग दान देते हैं तो उनके चेहरों पर रौनक आती है, क्योंकि वे एक तलाश में हैं। जब मैंने कर्नाटक में कहा था कि अहिंसा की ताकत बनाने का काम हिंदुस्तान कर सकता है और ब्रिटेन भी कर सकता है, दोनों 'यूनिलेटरल डिसआर्मामेंट' (एक-पक्षीय निरस्त्रीकरण) कर सकते हैं तो ब्रिटेनवालों को खुशी हुई। उन्हें लगा कि बाबा ने ब्रिटेन पर भी विश्वास रखा। वे लड़ाई का फल चख चुके हैं, इसलिए वे तलाश में हैं कि ऐसी शान्ति की ताकत बढ़े। लेकिन अभी तक हमने प्यार से मसले हल करके नहीं दिखाये। स्वराज्य के बाद हम राज्य चलाने में ही फँस गये।

सबसे बड़ा खतरा

पहले हम सुनते थे कि हिंदुस्तान में ५२ लाख भिखारी हैं। अब सुनते हैं कि ५५ लाख सरकारी नौकर हैं। इस बात में हमें सबसे बड़ा खतरा मालूम होता है। इतने सारे लोग मिलकर क्या राज्य चलाते होंगे ? इसका नतीजा यह होता है कि इस सियासत से अलग दूसरी कोई राह निकलेगी, इसकी तरफ किसी का ध्यान ही नहीं जाता है। जो कुछ करना है, सत्ता के जरिये ही किया जा सकता है, इसलिए सत्ता कब्जे में करनी होगी। इसमें तुम्हारी क्या खूबी रहेगी ? दुनिया में सब लोग 'पावर' (सत्ता) में ही पड़े हैं, उसीके जरिये खिदमत करने की सोचते हैं और उसीके लिए लड़ते-झगड़ते हैं। हम भी वैसा ही करेंगे तो क्या दुनिया को राह मिलेगी ?

नयी राह निकालिये

आप ही बताइये कि क्या हिंदुस्तान कभी भी अपनी माली (आर्थिक) ताकत और फौजी ताकत अमेरिका और रूस की बराबरी में कर सकेगा ? अमेरिका में फी आदमी १८ एकड़ जमीन है और हिंदुस्तान में सिर्फ ३-४ एकड़ जमीन है। केरल में उससे भी कम जमीन है। अभी केरल में क्या तमाशा चल रहा है ? उसमें बहुत गहरा सवाल है। फिर वहाँ जमीन इतनी नाकाफी है कि वहाँकी आबादी जमीन के लिए बोझ है। इसलिए वहाँ झगड़े होने ही वाले हैं, चाहे उनकी शक्ल कैसी भी हो। हमारे देश में जमीन कम है और आबादी बढ़नेवाली है। इस हालत में आप रूस, अमेरिका की बराबरी में माली और फौजी ताकत कभी 'बिल्ड अप' (विकसित) नहीं कर सकते हैं। उनके रास्ते पर जाकर आप उनके गुलाम या शागिर्द ही बन सकते हैं। इसलिए आपको नयी राह निकालनी चाहिए।

मैं कश्मीर आया तो सब तबकों से, पार्टियों से मिला। यहाँ आपस-आपस में काफी झगड़े हैं। लेकिन मेरी यह खुश-नसीबी है कि हर कोई मेरे पास दिल खोलकर बात करता है, किसीको कोई हिचक नहीं मालूम होती। हम अगर छोटी-छोटी चीजों के लिए ही लड़ते रहेंगे तो क्या वह ताकत पैदा कर सकेंगे, जो हमें करनी है ? यहाँपर हर कोई कहता है कि कश्मीर ऋषि-मुनियों का, वलीयों का, फकीरों का देश है। मैं कहता हूँ कि बात तो ठीक है, लेकिन क्या उन ऋषियों के मुताबिक हम कोई ताकत बना रहे हैं ? अगर कोई भिखारी कहे कि मेरा बाप लखपति था तो बाप का नाम लेने से उसे क्या इज्जत हासिल होनेवाली है ? लोग कहेंगे कि "तू तो भीख माँग रहा है।" इसलिए जब वह दिखायेगा कि मेरा बाप लखपति था तो मैं करोड़पति हूँ, तब उसे इज्जत हासिल होगी। वैसे तो सारा भारत ही ऋषि-मुनियों का देश है। भारत में कौन-सा ऐसा प्रदेश है, जहाँ ऋषि-संत नहीं हुए हैं ? परमात्मा की हिंदुस्तान पर बड़ी कृपा है कि उसने ऐसे ऋषि-मुनियों की बारिश ही उसपर की है। लेकिन आज हम कौन-सी ताकत 'डेवलप' (विकसित) कर रहे हैं ? गांधीजी आये और गये। फिर भी वही सियासत, वही कशमकश और वे ही झगड़े चल रहे हैं।

इंग्लैंड का अन्धानुकरण न करें

राजनीति का सारा नमूना हम पश्चिम से लेते हैं, मगर सोचते ही नहीं कि भारत और इंग्लैंड में कोई तुलना नहीं हो सकती है। इंग्लैंड एक छोटा-सा देश है, भारत बड़ा देश है। वहाँ एक ही जबान है, यहाँ चौदह जबानें हैं। वहाँ एक ही मजहब है, यहाँ ५-६ बड़े-बड़े मजहब हैं। वहाँ जातिभेद नहीं है, यहाँ जातिभेद है। इतना फर्क होते हुए भी वहाँका सारा ढाँचा यहाँ लागू करते हैं और फिर कहते हैं कि हिन्दुस्तान पिछड़ा हुआ देश है और अभी उसे इंग्लैण्ड की बराबरी में आने में देर लगेगी।

एक भाईने कहा कि यहाँ फाँसी की सजा बन्द होनी चाहिए। दूसरे भाई बोले, इंग्लैण्ड में भी वह बन्द नहीं हुई तो यहाँ कैसे होगी? याने हमारा 'ऐडियल' (आदर्श) इंग्लैण्ड है। इंग्लैंड तो सिर्फ ६०० साल का देश है और उसकी जबान भी कोई ७०० साल की है। कैंटरबरी से उसका साहित्य शुरू होता है। यहाँ तो दस हजार साल से तमद्दुन (सभ्यता) चली आ रही है। फिर भी वे लोग इंग्लैण्ड की मिसाल लेकर कहते हैं कि वह हमसे ज्यादा 'एडवान्स्ड' (आगे बढ़ा हुआ) है। सोचने की बात है कि इंग्लैण्ड विज्ञान में आगे बढ़ा हुआ है, लेकिन समाज-शास्त्र में नहीं बढ़ा है।

यूरोप में जबान की वीना पर छोटे-छोटे देश बने हैं। वहाँ पर मजहब एक ही है, रस्मुलखत (लिपि) भी एक ही है। वहाँकी जबानें इतनी नजदीक हैं कि कोई भी शख्स पन्द्रह दिनों में दूसरे की जबान सीख सकता है। मैंने जर्मन पन्द्रह दिनों में सीखी है। उन देशों के बीच शादियाँ भी हो सकती हैं। इतनी नजदीकी होने के बावजूद जर्मनी और फ्रांस के लोगों को यह दुःख है कि परमात्मा ने उन दो देशों के बीच कोई पहाड़ नहीं रखा। इसलिए एक ने 'सिगफ्रिड लाइन' बनायी और दूसरे ने 'मॅजिनो लाइन'। पिछले ९० साल से वे दोनों लड़ रहे हैं और उन लड़ाइयों को 'नेशनल वार्स्' (राष्ट्रीय युद्ध) माना जाता है। दरअसल में वे 'सिविल वार्स्' (गृह-युद्ध) हैं, लेकिन वैसा मानते नहीं। क्योंकि वहाँ सारे अलग-अलग देश बने हुए हैं। वहाँ २-४ करोड़ आबादी के छोटे-छोटे देश जबान की वीना पर बने हैं और हिन्दुस्तान में तो चौदह जबानें इकट्ठा हुई हैं। मुझे इसका बड़ा फक्र है कि यहाँपर हम चौदह 'डेवलप्ड' (विकसित) जबानों को इकट्ठा रख रहे हैं।

यूरोपवालों के लिए सबक

'पॉलिटिकल' (राजनीतिक) दृष्टि से यूरोप हिन्दुस्तान की बराबरी तब कर सकेगा, जब यूरोप का 'फेडरेशन' बनेगा। फिर वहाँ भी यहाँ जैसी यात्राएँ शुरू होंगी। जैसे यहाँ हम रामेश्वर का पानी लेकर काशी में अभिषेक करते हैं, वैसे ही वे 'व्होलगा' का पानी लेकर 'टेम्स' तक यात्रा करेंगे और 'सेंट पीटर्स' चर्च पर अभिषेक करेंगे। कुल देश एक हैं, यह लोगों के मन में बिठाने के लिए हमारे पुरखाओं ने यात्राएँ शुरू कीं।

क्या आप छोटी बात समझते हैं कि शंकराचार्य जैसा लड़का—वह मेरा लड़का ही माना जायगा, क्योंकि उसकी उम्र बत्तीस साल की थी और मेरी अब ६४ साल की है—केरल में पैदा हुआ और कश्मीर आकर उसने यहाँके पण्डितों से चर्चा करके उनको जीता। फिर यहाँके पहाड़ पर उसने लिंग की स्थापना की। १२०० साल से यहाँके लोग उसकी पूजा कर रहे हैं। यह सारा इसलिए हुआ कि सारा हिन्दुस्तान एक था। ऋषियों ने उसे एक बनाया था। जिस जमाने में आमदरफ्त के साधन मुहैया नहीं थे, पैदल ही जाना पड़ता था, बीच में खतरनाक जंगल आते थे, उस जमाने में केरल का एक लड़का यहाँ आकर यहाँके पण्डितों को जीतता है, यह बहुत बड़ी बात है। वह पैदा तो हुआ केरल में याने हिन्दुस्तान के एक सिरे पर और उसकी वफात (मृत्यु) हुई कैलास में, दूसरे सिरे पर। पता नहीं यूरोपवालों को यह कब सूझेगा कि 'हमारा देश एक बने।' जिन यूरोपवालों ने जबान की वजह से छोटे-छोटे टुकड़े देश में बनाये, उन्हें हम 'पॉलिटिकली एडवान्स्ड' समझते हैं! हमें तो समझना चाहिए कि वे 'पॉलिटिकली बॅकवर्ड' हैं और 'ट्राइबल' हैं।

इल्जाम बनाम इज्जत

हमारे यहाँ एस. आर. सी. के वक्त जबान के आधार पर सूबों की माँग की जाती थी, तब राजाजी ने कहा था कि यह 'ट्राइबॅलीजम' है। मैंने कहा था कि 'ट्राइबॅलीजम' देखना है तो यूरोप में जाइये, हिंदुस्तान में नहीं। हमारे यहाँ तो सिर्फ जबान के आधार पर अलग सूबे बनाने की माँग की गयी थी, अलग देश बनाने की नहीं। इसपर भी हमसे कहा जाता है कि हमें 'ट्राइबॅलीजम' से बरी होना चाहिए। मैं कहना चाहता हूँ कि हम 'ट्राइबॅलीजम' से कब के बरी हो चुके हैं। मगरीब के हिस्टोरियन्स ने लिखा है कि अंग्रेज जब हिंदुस्तान में आये, तब यहाँपर 'सिविल वार्स्' चलते थे। क्या मराठे और राजपूतों के बीच की लड़ाइयाँ 'सिविल वार्स्' थीं तो फ्रान्स और जर्मनी के बीच की लड़ाइयाँ 'सिविल वार्स्' नहीं थीं? लेकिन वहाँकी लड़ाइयाँ नेशनल वार्स् मानी गयीं। क्योंकि वहाँ अलग-अलग देश माने गये। लेकिन हमने अपना मुल्क छोटा नहीं, बड़ा माना। इसलिए मगरीब के इतिहासकारों ने हमपर जो इल्जाम लगाया था कि यहाँ 'सिविल वार्स्' चलते थे, उसे मैं कबूल करता हूँ और इज्जत की बात समझता हूँ।

गुलामी का नया रूप

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमें मगरीब से 'पॅटर्न' नहीं लेना है और अपनी ताकत बनानी है, जो फौजी या माली ताकत नहीं हो सकती है। हिंदुस्तान अपनी माली हालत सुधार सकता है, खुशहाल होकर जिंदगी बसर कर सकता है। लेकिन जैसे अमेरिका या रूस माली ताकत में दुनिया पर गालिब हुए हैं, वैसे हिंदुस्तान बनना चाहेगा तो कभी नहीं बन सकता। हिंदुस्तान दो ताकतें नहीं बना सकता है तो उसे कोई तीसरी ताकत बनानी होगी। नहीं तो उसे इस गुट में या उस गुट में जाकर दूसरे का शागिर्द बनना पड़ेगा। और जहाँ आप किसी गुट में गये, वहाँ गट्ट हो गये, खत्म हो गये।

आज पाकिस्तान की हालत क्या है? वहाँ अयूबखान जोर मार रहा है, लेकिन अमेरिका के बल पर। वहाँपर अमेरिका अपने अड्डे बना रही है और वहाँवालों को फौजी ट्रेनिंग भी दे रही है। इसीको वहाँवाले वे आजादी कहते हैं। अगर इसे ही आजादी कहा जाय तो गुलामी किस चिड़िया का नाम है? आज किसी देश को अपने कब्जे में रखने के लिए उसका 'एडमिनिस्टेशन' (कारोबार) हाथ में लेने की तकलीफ उठाना कोई जरूरी नहीं है। अंग्रेजों ने १५० साल तक हिंदुस्तान की हुकूमत चलायी। ऐसी जहालत अब कोई नहीं करेगा। आज तो किसी देश पर अपना 'इन्फ्लुएन्स' (वजन) हो तो काफी है। बाकी आपको आजादी हासिल है! आपको लड़ने की आजादी, फाँका करने

की आजादी बख्शी हुई है। सिर्फ आप पर हमारा वजन रहे और आपके मार्केट्स पर हमारा कब्जा हो।

दुनियाभर के लोग नयी देहली आते हैं और कहते हैं कि हिंदुस्तान की तरक्की हुई है, क्योंकि नयी देहली आने पर इन्सान को भ्रम होता है कि कहीं मैं वापस लंदन या पेरिस तो नहीं पहुँच गया? लंदनवाला और पेरिसवाला यहाँ आकर खुश होता है कि लंदन में और पेरिस में जो माल मिलता है, वह नयी देहली में मिलता है। लंदनवालों की अक्ल यह है कि वे अपनी दूकानों में इंग्लैंड का ही माल रखते हैं और नयी देहली की अक्ल यह है कि वहाँ लंदन, पेरिस, न्यूयार्क सबका माल मिलता है। इसीपर से हमारी तरक्की नापकर बाहरवाले हमें सर्टिफिकेट देते हैं। लेकिन इससे आपकी तरक्की नापी नहीं जायगी।

पराक्रमी लोगों का सामना कैसे करें?

अकाडमी बकाडमी बनाने से हमारी तरक्की नहीं होगी और न ताकत ही बनेगी। अंग्रेजी भाषा में हर साल दस हजार किताबें शाया होती हैं। मैं दो महीने से तड़प रहा हूँ कि कश्मीरी सीखूँ और उसके लिए कश्मीरी का 'ग्रामर' (व्याकरण) और 'डिक्शनरी' (शब्दकोष) मिले। लेकिन अभी तक आपने वह बनाया नहीं तो आप अंग्रेजी का क्या मुकाबला करेंगे? मैंने लोगों से कहा कि जब तक आप ईसाई मिशनरियों के पास तलाश नहीं करोगे, तब तक आपको ये दो चीजें नहीं मिलेंगी। अभी किसीने तलाश की तो पता चला कि उनके पास ग्रामर है और उन्होंने ही डिक्शनरी भी बनायी है। ऐसे पराक्रमी लोगों से ज्यादा आप कौन-सा पराक्रम करके दिखानेवाले हैं? माली, फौजी, सियासी मैदानों में आप उनसे ज्यादा कौन-सा पराक्रम करनेवाले हैं? इसलिए समझना चाहिए कि हमें अखलाकी, रूहानी ताकत ही बनानी होगी। हमें प्यार की ऐसी ताकत बनानी होगी, जिससे कि हम दिखा सकें कि बुरे लोगों का मुकाबला प्यार से भी कर सकते हैं। हिंदुस्तान, पाकिस्तान, चीन, रूस, अमेरिका वगैरह देश के लोग प्यार जानते हैं। प्यार से जिंदगी में लज्जत, जायका, जीनत आयेगी। बिना प्यार के जीना दूभर होगा। लेकिन क्या प्यार की कोई ताकत बनेगी क्या प्यार से बुरे लोगों का मुकाबला कर सकते हैं, इसका जवाब अभी तक था 'जी ना'। बचाने की ताकत फौजी ताकत ही है। प्यार के लिए घर, नाटक, संगीत, साहित्य, संस्कृति—ये सारे मैदान ठीक हैं। लेकिन अभी तक यह साबित नहीं हुआ कि प्यार से समाज का बचाव हो सकेगा। ऋषि, मुनि, वली, फकीरों के देशवासियों के नाते हमें यह करके दिखाना होगा।

लोग हमसे पूछते हैं कि प्यार की ताकत को कैसे 'डेवलप' (विकसित) किया जाय? मैं जवाब देता हूँ कि तशद्दुद (हिंसा) की ताकत दस हजार साल से बनती आयी है। उसे 'डेवलप' (विकसित) करने में कितने आलिमों ने, कितने 'एडमिनिस्ट्रेटर्स' ने, कितने 'स्टेटसमन' ने, सेनापतियों ने, सायन्सदाँ ने मदद की है! इसलिए यकीन रखो, सब्र रखो। यह जमाने की माँग है कि प्यार की ताकत बने, जिससे कि दुनिया के मसले हल हो सकें और बुरे लोगों का मुकाबला किया जा सके। दुनिया को आज यही प्यास है।

हम अगर दुनिया में प्यार की ताकत से शांति रखना चाहते हैं तो उसके दो पहलू हैं। १—बैनुल-अकवामी मैदान (अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र) में एक मुल्क दूसरे पर हमला करे तो उसका मुकाबला कैसे किया जाय? २—अंदरूनी शांति कैसे कायम रखना? इसमें से जो बैनुल अकवामी मामला है, वह बाद का है और आसान है। कॉलेज की पढ़ाई प्रायमरी स्कूल की पढ़ाई के बाद आती है और उससे ज्यादा आसान भी है। पहले हमें यह साबित करके दिखाना होगा कि हिंदुस्तान में कहीं भी दंगा-फसाद हो तो लोग प्रेम से वहाँ पहुँचते हैं और सबको रोकते हैं।

केरल के मामले में सभी दोषी हैं

अभी केरल में लोगों में जज्बा पैदा हुआ और हुकूमत चलाना मुश्किल हुआ, इसलिए वहाँकी सरकार रद्द हो गयी। इसमें किसका कितना कसूर है? ५०-५० है या ४०-६० है, यह बँटवारा आप कर लीजिये। लेकिन उस गुनाह से कोई भी बरी नहीं है। वहाँपर मेरे लोग काम करते हैं, जिनसे मुझे जानकारी मिलती रहती है। मैं जाहिर करना चाहता हूँ कि उसमें सब गुनहगार हैं, चाहे कुछ कम-बेसी हो। सोचने की बात है कि वहाँ हमने जो काम किया, उसे अहिंसा का, प्यार का काम नहीं कहा जायगा। जैसे हिंदू लोग परहेज करते हैं कि हम चार महीना बैंगन, प्याज वगैरह नहीं खायेंगे, वैसे ही वहाँपर कुछ लोगों ने परहेज किया होता कि मार-काट, हिंसा नहीं करेंगे तो ठीक होता। परन्तु वहाँ तो जो जितना कर सकते थे, कुल किया है।

गांधीजी के देश में गोलियाँ चलती हैं?

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमने किसी भी सूबे में कोई प्यार की ताकत बनायी है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। हिंदुस्तान में आये दिन गोलियाँ चलती हैं और उधर से पत्थर भी मारे जाते हैं। अगर हम रेकार्ड देखेंगे कि अंग्रेजों की हुकूमत में और हमारी हुकूमत में कितनी गोली चली और पत्थर मारे गये तो हमें शर्मिंदा होना पड़ता है। गांधीजी के देश में इतनी गोलियाँ चलती है और पत्थर मारे जाते हैं, यह कैसी बात है! इसलिए हम कम से कम देश के अंदर शांति, अमन की ताकत खड़ी करें, जिससे कि दंगा-फसाद न हो और कहीं हो भी तो पुलिस की जरूरत न पड़े। होना तो यह चाहिए कि हिंदुस्तान में बहुत सी बातों में लोग एक-दूसरे की मुखालिफत करते हुए भी कहीं भी शांति का भंग न होने दें और ऐसे तरीके से काम करें कि माहौल (वातावरण) अच्छा बना रहे। लोग होश में रहें।

यहाँ डराना, धमकाना, मार-पीटकर काम कराना, नहीं चलता है—ऐसी ताकत हमें हिन्दुस्तान में पैदा करके दिखानी होगी। इसीलिए सर्वोदयवालों ने तय किया है कि हम शान्ति-सेना बनायेंगे।

बहनें शांति-सेना में दाखिल हों

शांति-सेना में सब बहनें आ सकती हैं। बहनों को अब तक मौका ही नहीं मिला। जब तक मुलुख की हिफाजत का सारा दारोमदार तशद्दुद (हिंसा) पर होता है, तब तक बहनें सामने नहीं आ सकती हैं। बहनों की और भाईयों की बराबरी नहीं हो सकती है, यह बात तयशुदा है। लेकिन जहाँ प्यार की ताकत से काम करना है, खिदमत करनी है, वहाँ बहनें सामने आ सकती हैं और दुनिया को अपना नूर बता सकती हैं कि वे सबको बचानेवाली हैं। वे अपने बच्चों पर प्यार करती हैं। वे दुनिया को प्यार से जीत सकती हैं। उनमें प्यार की यह जो ताकत छिपी हुई है, उसे बाहर लाने का मौका अब मिलेगा। शांति-सेना ऐसी चीज है, जिसमें भाई और बहनें दोनों बाहर आकर काम कर सकते हैं।

गांधीजी की एक अजीब सूझ थी। जब सवाल आया कि शराब की दूकानों पर पिकेटिंग का काम कौन करेगा, तो गांधीजी

ने कहा कि बहनें करेंगी। यह सुनते ही लोग घबड़ा गये। कईयों ने कहा कि शराब की दूकानों पर तो समाज का सारा कचरा इकट्ठा होता है, वहाँ सारे शराबी, बदमाश जाते हैं; वहाँ बहनें कैसे जायँगी! लेकिन गांधीजी ने कहा कि "जहाँ सबसे ज्यादा अँधेरा हो, वहाँ हम ज्यादा रोशनी लायेंगे। जहाँ सारे बदमाश इकट्ठा होते हैं, ऐसी जगहों पर अपने पास प्यार की जो बढ़िया से बढ़िया ताकत है, उसीको भेजना चाहिए" और दुनिया ने तमाशा देखा: बहनें वहाँ गयीं, उन्होंने पुलिस की लाठियाँ भी खायीं और आखिर शराबियों को शर्मिन्दा होना ही पड़ा। इस तरह बहनों ने करामात की। इसलिए आप सब बहनों को मेरी दावत है कि आप शांति-सेना में आइये और तय कीजिये कि हम शांति के लिए मर मिटेंगी। मारनेवाले के लिए हमारे दिल में नफरत नहीं होगी। हम समझेंगी कि वे मूरख हैं, जो एक न एक दिन असलियत समझेंगे।

खिदमत करनेवाले लोग आगे आयें

आप यह मत समझिये कि जैसे फौज बेकार रहती है और सिर्फ लड़ाई के मौके पर काम करती है, वैसे ही शांति-सेना का होगा। शांति-सैनिक 'पीस टाईम' में खिदमत करेंगे और गैरजानिबदार (पक्षातीत) बनकर काम करेंगे। हिन्दुस्तान में आज यही बात मुश्किल मालूम होती है, क्योंकि लोगों के दिमाग सियासत में पड़े हैं। मुलुख में नयी-नयी सियासी जमातें खड़ी हो रही हैं। वह भी अच्छा है। इससे मुलुख में एक जान है, ऐसा दीखता है। इसलिए मुझे भी वह अच्छा लगता है। लेकिन आखिर दुनिया के मसलों का हल इससे नहीं होगा। आप पेड़ से नीचे उतरेंगे, तभी पेड़ को काट सकेंगे। इसलिए चन्द लोग तो ऐसे निकलें जो कि 'पार्टी पॉलिटिक्स' से अलग होकर काम करें। शांति-सेना में ऐसे लोग ही आ सकते हैं। दूसरे लोग आयेंगे तो पहले से ही लोगों के दिलों में शक पैदा होगा कि ये पार्टीवाले पता नहीं क्या करेंगे! क्या गैरजानिबदार बनकर, पार्टियों से अलग होकर, सबकी खिदमत करनेवाले, सबपर समान प्यार करनेवाले लोग कश्मीर में नहीं मिलेंगे?

> मेरी माँग है कि कश्मीर-घाटी में हर पाँच हजार लोगों के पीछे एक कारकून (कार्यकर्त्ता) के हिसाब से चार सौ कारकून मिलने चाहिए। फिर उनकी ट्रेनिंग वगैरह का इन्तजाम कीजिये और कहिये कि यह ऋषि-मुनियों का, लल्ला का देश है। तब आपकी जबान में जोर आयेगा।

शान्ति-सेना के लिए सक्रिय सहयोग चाहिए

शान्ति-सेना किस बल पर काम करेगी? उसके पीछे सैंक्शन क्या होगा? आज आपकी फौज काम करती है तो उसके पीछे सैंक्शन तलवार नहीं है। तलवार उनके हाथ में है, लेकिन उनकी ताकत यह है कि आपने सरकार को चुना है, जिससे उन्हें सैंक्शन मिलता है। यही 'मॉरल' ताकत है, जो फौज के पीछे है। आप टैक्स देते हैं और सरकार को कबूल करते हैं, इसी तरह शांति-सेना लिए आप क्या टैक्स देंगे? उसके पीछे आपके हर घर की ताकत न हो तो वह कैसे काम करेगी?

एक भाई ने हमसे पूछा कि आप हर घर से मदद चाहते हैं तो कुल सर्वोदय-विचार के लिए चाहते हैं या सिर्फ शान्ति-सेना के लिए? मैंने कहा कि शांति-सेना के पीछे 'सिर्फ' नहीं लगता है, वह कुल है, जुज नहीं। जैसे 'पीस टाईम' में, मामूली वक्त में फौज कवायत करती रहती है, वैसे ही शांति-सेना मामूली वक्त में खिदमत करेगी। शान्ति-सैनिक घर-घर जायँगे और हर घर से वाकफ़ियत रखेंगे। यह काम हमें कुल देश में करना है। इसका नतीजा यह होगा कि जहाँ शांति-सैनिक काम करते होंगे, वहाँ दंगा-फसाद नहीं होगा। सिर्फ इतना ही नहीं होगा, बल्कि वहाँके लोगों में आपस में इतना प्यार होगा कि वहाँ वकीलों की जरूरत नहीं रहेगी, वहाँसे कोई झगड़ा कोर्ट में नहीं जायगा। जब वकील हमारे पास आकर शिकायत करेंगे कि आपके दिल में सबके लिए रहम है, लेकिन आप हमारे लिए बेरहम बन गये हैं, आपकी तहरीक की वजह से झगड़े नहीं होते हैं और हमें कोई काम नहीं मिलता है, तब हम कहेंगे कि शांति-सैनिक पास हो गया, कामयाब हो गया।

फिर हम वकीलों से क्या कहेंगे? यही कि गाँव-गाँव जाकर उस्ताद बन जाइये और गाँव के लोगों को कानूनी सलाह देते रहिये, जिससे गाँव में झगड़े न हों। हमें हिन्दुस्तान के हर गाँव के लिए एक वकील याने चार लाख वकील चाहिए। उन्हें हम थोड़ी जमीन भी देंगे।

मैं कहना यह चाहता हूँ कि शांति-सेना सिर्फ दंगा-फसाद के वक्त पर ही काम नहीं करेगी, बल्कि हर-हमेशा काम करेगी। इसलिए उसे सर्वोदय-विचार से अलग नहीं कर सकते हैं। हमें सर्वोदय-विचार के लिए, जिसका बड़ा हिस्सा शांति-सेना है, हर घर से एक मुट्ठी चावल चाहिए। मैं चाहता हूँ कि हर घर में सर्वोदय-पात्र कायम हो। उसमें हम तब तक डालते रहेंगे, जब तक खाते रहेंगे। बच्चे के हाथ से हर रोज सर्वोदय-पात्र में एक मुट्ठी चावल डालने से बच्चे को तालीम मिलेगी। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

मार्तन्ड-मटन (कश्मीर) १०-८-'५९

धर्म का यह रूप इन्सानियत को मिटानेवाला है

अभी हम टीले पर हो आये। वहाँ मार्तंड का पुराना मंदिर है, वह देखा। बहुत प्रेम से एक जमाने में लोगों ने वह चीज बनायी। खूबसूरत चीज है। उसे तोड़नेवाले भी दुनिया में निकले। लेकिन विज्ञान के जमाने में अब एक ऐसी चीज निकली है, जिससे अब इस प्रकार तोड़ने की तकलीफ भी लोगों को नहीं करनी पड़ेगी। बम ऊपर से गिरता है तो कुल का कुल खात्मा होता है। हिरोशिमा पर बम गिरा और इतना बड़ा शहर खतम हो गया। उसी तरह अभी जो 'वार' हुआ, उसमें बर्लिन शहर करीब-करीब खतम ही हो गया। वे बम भी पुराने थे। इसके आगे तो उससे भी अधिक शक्तिशाली, ताकतवर बम बनेंगे। बर्लिन और हिरोशिमा शहर खतम हो गये। उन्हें बारह साल में फिर से नया बनाया है। यह सारा क्या हो रहा है?

इन्सान से इन्सान को खतरा है

इन्सान इन्सान से डर रहा है। जंगली जानवर से भी इन्सान डरता था। लेकिन उसके लिए इन्सान ने बंदूक निकाली और वह पर्याप्त मालूम हुई। इन्सान के डर से सारे जानवर जंगल में भाग गये। लेकिन इन्सान को इन्सान से इतना खतरा

पैदा हुआ कि ॲटम बनाना पड़ा और भी खतरनाक बम बनाने पड़ रहे हैं। इतना खतरा भाई को भाई से पैदा हुआ है! यह सारा डर दुनिया में छाया है। दिल में इतमीनान नहीं है। छोटे-छोटे देश भी डर रहे हैं और बड़े-बड़े देश भी डर रहे हैं। इस समय जितना डर छाया हुआ है, उतना डर इससे पहले कभी नहीं था। यह सारा सियासत के कारण हो रहा है। यह सियासत ऐसी चीज़ पैदा हुई है कि दुनिया को खत्म कर सकती है।

मजहबी झगड़े ओछेपन की निशानी

यह सिख जमात! एक मजबूत जमात है। गुरु नानक ने इसे दिल को जोड़ने के लिए पैदा किया, लेकिन अब आप पंजाब में जाके देखिये, गुरुद्वारा में सियासी झगड़े हो रहे हैं। इस प्रकार के कारनामों से सिख मजहब टिकेगा? गुरुद्वारा में एक भाई ने दूसरे भाई को कत्ल कर डाला। दोनों सिख थे। सियासी झगड़े मजहब में लाये गये, उसीका यह परिणाम है।

यहाँ हमने क्या देखा? यहाँ एक मस्जिद है, इबादत की जगह है। लेकिन वहाँ हिंदू, मुसलमानों के झगड़े हैं। यह ओछापन है, नीचता है। हिंदू-मुसलमान, हिंदू-सिखों के झगड़ों को इतनी अहमियत दी जा रही है कि मानो दुनिया में यही एक मसला है।

आज कुछ पंडित आये थे। उन्होंने हमें वेद और गीता सुनायी। हमें सुनकर बहुत दुःख हुआ। वे तलफ्फुज (उच्चारण) ठीक नहीं करते थे। न वेद और न गीता ही वे ठीक बोले। वेद का तो ठीक है, वह जरा कठिन है, लेकिन गीता भी ठीक नहीं बोल सके। यह कश्मीर है। 'कश्मीरपुरवासिनी शारदे' याने इस नगर में रहनेवाली शारदा! शारदा याने 'गॉडेस ऑफ लर्निङ्ग' विद्या की देवता! वह यहाँ रहती थी। ऐसा वर्णन उपनिषद् में आता है। जिस कश्मीर में इतनी विद्या थी, वहाँ अब वह विद्या नहीं रही। विद्या का अभिमान रह गया है। गुरूर रह गया है।

अब यहाँ झगड़े हैं। उन्हें इतना महत्त्व क्यों दिया जाना चाहिए? होना तो यह चाहिए कि इन झगड़ों को खत्म करें। यहाँ का झगड़ा मिटाना ऐसी कौन-सी बड़ी बात थी? लेकिन यह झगड़ा अब कोर्ट में गया है, ऐसा कहते हैं।

धर्म और झगड़े

यहाँ वह जो इबादत की जगह है, वहाँ कोई गीता पढ़े तो सिखों को दुःख क्यों होना चाहिए? कोई गुरु-ग्रंथ पढ़े तो हिंदू को दुःख क्यों होना चाहिए और कोई कुरानशरीफ पढ़े तो हिंदू और सिखों को दुःख क्यों होना चाहिए? पर दुःख होता है। सभी अपने-अपने हक की बात करते हैं। क्या अंग्रेजों का हिंदुस्तान पर हक नहीं था? आज हमसे किसीने पूछा कि क्या यहाँके झगड़ों के कागज आप देखेंगे? हमने कहा, वह कागजात होली में जला दो तो दिल जरा ठंडा होगा। अंग्रेजों के पास भी कागज थे हिंदुस्तान की मालकियत के। हैद्राबाद के निजाम को महाराजा कहते थे उनके पास भी कागज थे। लेकिन क्या चाटते हो कागज को? दो दिन की जिंदगानी है। मर जाओगे तो फिर क्या करोगे? क्यों झगड़ते हो? मालिक बनके बैठे हो! मरने के बाद क्या होगा? मुट्ठीभर हड्डी!

तीर्थक्षेत्र में भी इन्सानियत नहीं!

यह तीर्थक्षेत्र है! तुम यहाँ रहकर लड़ोगे? दुनियाभर के लोग यहाँ आते हैं। उनको झगड़ा सुनाओगे तो तुम्हारी हँसी होगी। वे लोग एक दिन के लिए मन में भावना लेकर आते हैं और तुम लोग यहाँ ३६५ दिन रहते हो। बाहर के लोग सोचते होंगे, कितना पुण्य यहाँके लोग कमाते हैं। परन्तु यहाँके झगड़े देखकर वे ही पुण्य की भावना लेकर आनेवाले बाहर जाकर क्या सुनायेंगे? मार्तण्ड में हम गये थे। वहाँ क्या देखा? वहाँ इंसान भी नहीं और इन्सानियत भी नहीं! अगर यहाँ आपस में प्रेम दीखेगा तो वे मार्तण्ड का महत्त्व गायेंगे। झगड़ा देखेंगे तो यही कहेंगे कि वहाँ हमने इन्सानियत नहीं, हैवानियत देखी। अब मैं यहाँसे जाऊँगा तो क्या कहूँगा, यही कि यहाँ तीन जमातें रहती हैं, लेकिन उनका दिल तंग है। आपस-आपस में प्रेम नहीं है। भाइयों, यह तीर्थस्थान है। संस्कृत में कहावत है: 'अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति, पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।' दूसरी जगह जो पाप होते हैं, वे पुण्यक्षेत्र में याने तीर्थक्षेत्र में जाकर धोये जाते हैं। लेकिन तीर्थक्षेत्र में जो पाप होते हैं, वे कहाँ धोये जायँगे? वे वज्रलेप हो जाते हैं, पक्के हो जाते हैं।

इन झगड़ों के कारण आपकी बदनामी हो रही है। आप भगवान के पास जायँगे तो वहाँ कोड़े पड़ेंगे। वह कहेगा कि क्या तीर्थयात्रा में रहकर ऐसा व्यवहार करते थे? मैं यह नहीं मानता कि यही एक तीर्थक्षेत्र है। सभी गाँव मेरे लिए तीर्थ-क्षेत्र हैं। मैं मानता हूँ कि दुनिया पाक है। जहाँ प्यार है, वहाँ तीर्थक्षेत्र है। क्या ऐसा तीर्थक्षेत्र हो सकता है, जहाँ झगड़े हैं, द्वेष है, मत्सर है, हसद है? झगड़ा किस चीज का है? कोई कहता है, इसका नाम 'नानक-सरोवर' है और कोई कहता है 'मार्तंड'! बस! और तवारीख देखते हैं तो कहते हैं हमारा 'नाम' पुराने जमाने से चला आया है। इसी बात का झगड़ा है।

धर्मवाले ऐंठ में न रहें

दुनिया में दो प्रकार की तरक्की होती है। (१) रूहानी तरक्की और (२) माली तरक्की। लेकिन आपका जो ढंग है, उससे दोनों प्रकार की तरक्की नहीं हो सकती है। यहाँका झगड़ा सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ।

मुझे तो हर चीज में आनंद आता है। कोई गीता पढ़े तो भी आनंद आता है, कुरानशरीफ पढ़े तो भी आनंद आता है, बाइबल पढ़े तो भी आनंद आता है और गुरुग्रंथ पढ़े तो भी आनंद आता है। सब ग्रंथों में एक ही चीज बतायी है। सब्र करो, रहम रखो, सचाई पर चलो! गुरुग्रंथ में क्या आता है? यही आता है—"हुक्म रजायी चलणा। नानक लिखिया बात।" उसके हुक्म से सारा होता है। सब ग्रंथों में यही बताया गया है। फिर भी भगवान का नाम लेकर झगड़ते हैं। एक हाथ में गुरुग्रंथ और दूसरे हाथ में तलवार! मुख में राम और बगल में छूरी जैसा ही हुआ। अरे भाई! ऐसे कितने ही मार्तंड आयेंगे और जायँगे। कितने बड़े-बड़े किले टूटे। कितने बड़े-बड़े नगर खत्म हुए। एक दिन हमें भी तो जाना है! इसलिए नम्र बनो, अपनी ऐंठ में मत रहो, जरा झुको, रहम रखो।

यह न्याय? यह न्यायालय?

हाईकोर्ट में केस गया है। हाईकोर्ट में जज होता है। क्या कभी हाथ में कुदाली लेकर प्रोडक्शन का काम करता है वह? ये वकील, पुलिस, जज सारी बेकारों की जमात है। अपने-अपने में तुम लड़ते हो और उनको काम देते हो! चार साल लगातार केस चलती रहती है। वकील पैसा लूटता रहता है। तारीख जो होती है, वह आगे ढकेली जाती है। उन लोगों को

तनख्वाह मिलती हैं। ये वकील, जज जो फैसला देंगे, वह सब आपको क्या मीठा लगेगा ?

टॉलस्टाय नाम के एक बहुत बड़े आलीम रूस में हो गये। गांधीजी के वे गुरु थे। उनकी किताबें पढ़कर बहुतों को अच्छे संस्कार मिले हैं। उन्होंने एक कहानी लिखी है। नजदीक पड़ोसी के घर में कोई रो रहे हैं। बच्चा माँ को पूछता है : वे लोग क्यों रोते हैं ? माँ ने जवाब दिया 'कोर्ट ने उनके खिलाफ फैसला दिया है।'

बच्चा : अब वे क्या करेंगे ?

माँ : अब वे डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में जायँगे।

बच्चा : वहाँ भी खिलाफ फैसला हुआ तो कहाँ जायँगे ?

माँ : फिर वे मास्को के कोर्ट में जायँगे।

बच्चा : वहाँ भी खिलाफ फैसला हुआ तो ?

माँ : फिर वे परमात्मा की कोर्ट में अपनी अर्जी पेश करेंगे।

बच्चा : इतना कर गुजरने के बाद वे परमात्मा के पास जायँगे ! तो पहले ही वहाँ क्यों नहीं जाते हैं ?

माँ क्या जवाब देती ? वह चुप बैठती है। ऐसी यह दिलचस्प कहानी है। मतलब यही हुआ कि जिसके हाथ में डंडा है, उसीका मानेंगे।

ये देहातवाले ! ये शहरवाले

सिखों के 'जपुजी' ग्रन्थ में वर्णन आता है। दुनिया में कौन-कौन लोग किस तरह काम कर रहे हैं। कहा है, तीन प्रकार के लोग काम करते हैं।(१)"असंख्य मूरख अन्ध घोर !"घोर अज्ञानी लोग, जलील ! जिन्दगी कैसी बसर करना, यहभीजिन्हेंमालूम नहीं। ऐसे अज्ञानी लोग देहात में रहते हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख नहीं, बल्कि मूरख अंध अज्ञानी लोग देहात में भरे हैं। यह है जमात नम्बर १। जमात नम्बर २ है "असंख्य चोर हरामखोर" हराम का खानेवाले, बेकार बैठकर खानेवाले, ऐसी जमात शहरों में रहती है। बड़े-बड़े वकील, जज, ये शहरवाले हराम का खानेवाले हैं। यह मैं नहीं बोल रहा हूँ। यह तो गुरु नानक बोल रहे हैं। अज्ञानी लोगों को ये लोग ठगते हैं और देहात के अज्ञानी लोग ठगे जा रहे हैं। जमात नम्बर ३ कौन-सी है। (३) जोर-जबर्दस्ती से हुकूमत चलानेवाले लोग ! मूरख लोग ठगे जाते हैं और ठगनेवाले दूसरे होते हैं। दोनों के झगड़ों पर हुकूमत चलानेवालों की तीसरी जमात है। इसलिए आप मूरख और चोर बनकर झगड़ा बढ़ायेंगे तो वे लोग हुकूमत चलायेंगे, यह आप ध्यान में रखें।

झगड़े खत्म करो

आज एक भाई ने हमसे सवाल पूछा है कि 'लोकशाही माने क्या ?' हम कहते हैं कि आज लोकशाही है कहाँ ? जब तक चंद लोगों के हाथ में हुकूमत रहेगी, तब तक सच्ची लोकशाही नहीं हो सकती। और ऐसा तब तक नहीं हो सकता, जब तक गाँव-गाँव के लोग एक होकर नहीं रहेंगे, जमीन की खानगी मालकियत नहीं मिटायेंगे। गाँव में जमीन गाँव के मालकियत की होगी। हर गाँव में ग्रामसभा गाँव की जिम्मेवारी उठायेगी। गाँव के लोग एक होकर रहेंगे। गाँव का झगड़ा गाँव के बाहर नहीं जाने देंगे, तब ग्रामस्वराज्य आयेगा। हिंदुस्तान को स्वराज्य मिला है याने क्या हुआ ? हमारे झगड़े दिल्ली से बाहर लंदन में, प्रीव्ही कौंसिल में जाते थे। अब स्वराज्य में आखिरी फैसला दिल्ली में होता है। हिंदुस्तान के बाहर नहीं जाता। अगर वह बाहर जाता तो आजादी मिली, ऐसा कभी नहीं मान सकते थे। गाँव में झगड़ा हुआ और वह बाहर गया तो भी ऐसा ही माना जायगा कि गाँव को स्वराज्य नहीं मिला है। झगड़े का फैसला गाँव में नहीं हुआ तो क्या करना चाहिए ? गाँव में जो सज्जन होंगे, जिनपर सारे गाँव को भरोसा है, श्रद्धा है, विश्वास है, उनके सामने झगड़ा पेश करना चाहिए। वे सज्जन गैरजानिबदार होंगे। उनका फैसला गाँववाले मानेंगे। ऐसे सज्जन हर गाँव में होते ही हैं। रावण की लंकानगरी में, राक्षसनगरी में भी एक विभीषण निकला तो क्या आपके गाँव में ऐसा सज्जन, ऐसा विभीषण नहीं होगा ? क्या आपका गाँव राक्षसनगरी से भी गया-बीता है ? ऐसा मत सोचो। अपने गाँव में सज्जन के पास झगड़ा ले जाओ, पेश करो। उनका फैसला मानो और अपने झगड़े खत्म कर दो।

भाइयो, मेरे कहने से किसीका दिल दुःखी हो तो अच्छा ही है। जरा सोचने लगेंगे। और दुःखी नहीं हो तो भी अच्छा ही है। मैंने जो बातें कहीं, वे सही हैं। आप ठीक सोचेंगे तो आपके ध्यान में वे बातें आयेंगी। नहीं तो आपको सम्हालने के लिए परमात्मा बैठा ही है। वह जिस तरह सम्हालेगा, सम्हाले। मैं तो यहाँसे कल चला जाऊँगा और यहाँकी बातें यहीं भूल जाऊँगा। मेरे लिए तो यह खत्म ही है। मैं आपकी बदनामी दुनिया में कतई नहीं करूँगा। हाँ, अगर आप अच्छा काम करेंगे तो आपका गान जरूर गाऊँगा। लेकिन बदनामी तो कतई नहीं करूँगा। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

पहलगाँव (कश्मीर) १३-८-'५९

अगर आत्मदर्शन नहीं हुआ तो केवल अमरनाथ के दर्शन से क्या होगा ?

आज मेरे सामने ऐसे बहुत से लोग बैठे हैं, जो हिंदुस्तान के अलग-अलग सूबों से आये हुए हैं। इन बैठे हुए लोगों में से कुछ अमरनाथ की यात्रा के लिए जानेवाले हैं। अमरनाथ जैसी यात्राएँ भारत में हजारों बरसों से चल रही हैं। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ, जो समझते हैं कि इससे मनुष्यों को कुछ भी फायदा नहीं होता है और इससे वे पहले जैसे ही रह जाते हैं या कभी-कभी अपनी मूल हालत से भी बदतर बन जाते हैं, क्योंकि तीर्थयात्रा करनेवाले समझते हैं कि हम यात्रा में गये तो पुण्य हासिल हो गया यानी फिर आगे पाप करने का मार्ग भी खुल गया। यात्रा में जानेवाले पहले से बदतर बनते हैं और गिरते हैं, ऐसा मैं नहीं मानता। मैं मानता हूँ कि उसमें से कुछ न कुछ लाभ जरूर पहुँचता है। लेकिन सोचने की बात है कि क्या यात्रा से भी बेहतर और कोई बात हो सकती है या नहीं ! उसमें जितना परिश्रम किया जाता है, उतना ही परिश्रम दूसरी तरह से किया जाय तो क्या इन्सान की रूहानी तरक्की हो सकती है ? इसमें यह कहने की गुंजाइश है कि इससे बेहतर तरीके भी हो सकते हैं।

अमरनाथ की ओर नहीं

मैं यहाँ तक आया हूँ, लेकिन अमरनाथ नहीं जा रहा हूँ।

मेरी उम्र ६४ साल की है। इसलिए मेरे लिए दुबारा वहाँ जाना मुमकिन नहीं होगा। अभी मुमकिन था और मैं चाहूँ तो मेरे लिए सब प्रकार की सुविधाएँ भी हो सकती हैं। हो भी रही थीं, लेकिन मैंने कहा कि उधर मेरा काम नहीं है, इसलिए मैं नहीं जाऊँगा। इसमें मेरा जो विचार है, वह मैं आपके सामने रखूँगा।

अभी मैं पीरपंजाल लांघकर आया हूँ। वह भी अमरनाथ की तरह १३॥ हजार फुट ऊँचा है। वहाँ हमें बरफ पर चलना पड़ा। भगवान शिवजी बरफ पर बैठकर ध्यान करते होंगे, उनका खयाल करके हमने भी बरफ पर बैठकर ध्यान किया। २। साल पहले कन्याकुमारी में समुन्दर के किनारे बैठकर हमने ध्यान किया था। उसी तरह पीर की ऊँचाई पर भी हमने ध्यान किया। लेकिन मैं पीर पर ध्यान के लिए नहीं गया था। मुझे कश्मीर जाना था और सैलाब ने मुझे पीर के उस पार रोक रखा। वह सैलाब इतना भयानक था कि कश्मीर के लोगों ने पिछले ६०-७० साल में ऐसा सैलाब नहीं देखा था। वहाँ हमारे सामने लोग मर रहे थे। देखते-देखते सात आदमी मर गये, जो मुसलमान थे। उन्हें दफनाने का काम हमारी टोलीवालों ने किया। एक शख्स मिट्टी के ढेले के अन्दर जिन्दा दफनाया गया था, उसे हमने बाहर निकाला। दो दिन उसकी सेवा की। जब वह मर गया तो उसे भी दफनाने का काम हमीने किया। सामने पीर-पंजाल खड़ा था। पीर को टालना ही होता तो दो-तीन सौ मील चलकर दूसरे रास्ते से हम कश्मीर आ सकते थे। लेकिन हमने उसे टाला नहीं और अपना यह विचार जाहिर किया कि अगर मैं पीर-पंजाल नहीं लांघ सका तो कश्मीर नहीं जाऊँगा। और इसे ईश्वर का इशारा समझकर वापस पंजाब लौट जाऊँगा। हमारी इस बात से ईश्वर पर भार आया। उसका मेरे पास कोई सुबूत नहीं है, लेकिन मैं मानता हूँ कि वह भार ईश्वर पर पड़ा। फिर हम पीर पर चढ़े। पहले दिन बारिश हुई। ओले गिरे। उस समय हम छोटे-से टेंट में थे। हम वहाँ बच गये, लेकिन ईश्वर ने दिखा दिया कि अगर मैं करना चाहूँ तो क्या कर सकता हूँ? यह दिखाने की जरूरत नहीं थी। हम ईश्वर की शक्ति को तो जानते ही थे, वह हर बात कर सकता था। लेकिन उसने हमें जाँच लिया। वहाँसे वापस जाना आसान था। लेकिन हमने तय किया कि हम आगे जायँगे। फिर आगे दो दिन आसमान बिलकुल साफ रहा। हम कश्मीर-वैली में पहुँच गये। इतना सारा मेहनत का काम हमने किया, जिंदगी को खतरे में डाला, क्योंकि यही कर्तव्य था। अगर भूदान के सिलसिले में मुझे अमरनाथ जाना पड़े तो मैं जाऊँगा। उसमें जो भी जोखिम उठानी पड़े, उठाऊँगा। क्योंकि भगवान रक्षा करने बैठा है। लेकिन अभी मेरा फर्ज वहाँ नहीं है। इसलिए मेरा वहाँ जाना जरूरी नहीं है। इसीलिए मैं अभी अमरनाथ नहीं जा रहा हूँ।

ध्यानः कर्तव्य हो

आप बड़ी श्रद्धा से अमरनाथ जायँगे। आप जरूर जाइये। वहाँ स्वामी विवेकानंद भी गये थे। उन्हें वहाँ बड़ा आनंद मालूम हुआ। वे ध्यानयोगी थे। वहाँपर उन्होंने भगवान शंकर का ध्यान किया होगा। मैंने भी पीरपंजाल पर ध्यान किया था, लेकिन उस ध्यान के लिए मैं वहाँ नहीं गया था। गीता में कहा है 'ध्यानात् कर्मफलत्यागः' ध्यान से भी कर्मफल का त्याग श्रेष्ठ है। याने आपको जो कर्तव्य प्राप्त हुआ है, वह आप फलत्यागपूर्वक करते रहेंगे तो वह चीज ध्यान से भी श्रेष्ठ है, क्योंकि ध्यान में भी फल की वासना होती है। मैंने इतना ध्यान किया तो मुझे तरक्की के रूप में, चित्तशुद्धि के रूप में उसका फल मिलना चाहिए, ऐसी वासना हो सकती है। मान लीजिये कि यहाँ जनता के सामने कोई मसला पेश है, सैलाब का मुकाबला कैसे करना यह मसला पेश है तो उसके लिए ध्यान भी करना पड़ेगा और यह ध्यान करना जरूरी है, क्योंकि वहाँपर ध्यान कर्तव्य हो जाता है। जैसे हम यह नहीं कह सकते हैं कि हम जो भी क्रिया करें, उससे आध्यात्मिक उन्नति होगी ही, वैसे ही जो भी ध्यान किया जाय, उससे आध्यात्मिक उन्नति होती ही है, ऐसा भी नहीं है। ध्यान कर्तव्य होता है और कर्म भी कर्तव्य होता है, तभी उससे आध्यात्मिक उन्नति होती है। जब कर्तव्य होगा, तब ध्यान किया जायगा और कर्म भी किया जायगा। दोनों फल-त्याग की भावना से किये जायँगे। दोनों में फल की आसक्ति नहीं रहेगी। अन्यथा ध्यान कर्तव्य न होकर चित्त में उसकी आसक्ति हो तो वह (ध्यान) आध्यात्मिक उन्नति के लिए बहुत ज्यादा मदद करनेवाली चीज तो होगी ही नहीं, उलटे आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग में रोड़ा अटकानेवाली चीज हो जायगी।

यात्रा से अहंकार न हो

आप अमरनाथ हो आयेंगे, तब अपने-अपने गाँव पहुँचने पर जो वहाँ नहीं गये, वे लोग आपको नमस्कार करेंगे और कहेंगे कि आप बहुत बड़ा काम करके आये हैं, साक्षात्कार करके आये हैं। आपको साक्षात्कार हुआ या नहीं हुआ, पता नहीं। लेकिन वे तो मानेंगे कि जरूर हुआ है और फिर वे आपके चरण छूयेंगे। आपने अगर माना कि हमें साक्षात्कार हुआ है तो फिर अमरनाथ की यात्रा से आपकी आध्यात्मिक उन्नति होने के बजाय अवनति हो सकती है। यह सोचने की बात है।

अभी मैं भूदान-ग्रामदान का काम करता हूँ, गरीबों की खिदमत करता हूँ। लोग मुझे प्रणाम करने आते ही हैं। एक दफा एक हाईकोर्ट के जज ने मेरे चरण छूये। मैंने उन्हें मना करते हुए कहा कि आप पढ़े-लिखे होकर ऐसा क्यों करते हो? उन्होंने कहा कि मैं पढ़ा-लिखा हूँ, इसीलिए करता हूँ। आपके पाँवों की बदौलत ही आपकी यात्रा चलती है, इसीलिए मैं आपके पाँवों को ही प्रणाम करता हूँ। इस तरह बड़े-बड़े लोग भी मेरे चरण छूते हैं, इससे मान लीजिये कि मेरे सिर पर अहंकार चढ़ जाय तो मेरा सारा किया-कराया खत्म हो जायगा। फिर भले ही दुनिया में मुझे इज्जत हासिल हो, लेकिन वहाँ (भगवान के पास) इज्जत हासिल नहीं होगी। वहाँ एक न्याय करनेवाला बैठा है। वह वहाँ है या नहीं, यह अलग बात है।

[चालू]

अनुक्रम

१. हमें एक स्वतन्त्र शान्ति की शक्ति का निर्माण करना है!
श्रीनगर ४ अगस्त '५९ पृष्ठ ६२१
२ धर्म का यह रूप इन्सानियत को मिटानेवाला है
मार्तंड-मटन १० अगस्त '५९ ,, ६२५
३ यदि आत्मदर्शन नहीं हुआ तो केवल अमरनाथ के दर्शन
पहलगाँव १३ अगस्त '५९ ,, ६२७.

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी